

श्री गणेश चालीसा ( [Ganesh Chalisa lyrics](#) )

॥ दोहा ॥

जय गणपति सदगुण सदन,  
कविवर बदन कृपाल ।

विघ्न हरण मंगल करण,  
जय जय गिरिजालाल ॥

॥ चौपाई ॥

जय जय जय गणपति गणराजू ।  
मंगल भरण करण शुभः काजू ॥

जै गजबदन सदन सुखदाता ।  
विश्व विनायका बुद्धि विधाता ॥

वक्र तुण्ड शुची शुण्ड सुहावना ।  
तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन ॥

राजत मणि मुक्तन उर माला ।  
स्वर्ण मुकुट शिर नयन विशाला ॥

पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूलं ।  
मोदक भोग सुगन्धित फूलं ॥

सुन्दर पीताम्बर तन साजित ।  
चरण पादुका मुनि मन राजित ॥

धनि शिव सुवन षडानन भ्राता ।  
गौरी लालन विश्व-विख्याता ॥

ऋद्धि-सिद्धि तव चंवर सुधारे ।  
मुषक वाहन सोहत द्वारे ॥

कहौ जन्म शुभ कथा तुम्हारी ।  
अति शुची पावन मंगलकारी ॥

एक समय गिरिराज कुमारी ।  
पुत्र हेतु तप कीन्हा भारी ॥

भयो यज्ञ जब पूर्ण अनूपा ।  
तब पहुंच्यो तुम धरी द्विज रूपा ॥

अतिथि जानी के गौरी सुखारी ।  
बहुविधि सेवा करी तुम्हारी ॥

अति प्रसन्न हवै तुम वर दीन्हा ।  
मातु पुत्र हित जो तप कीन्हा ॥

मिलहि पुत्र तुहि, बुद्धि विशाला ।  
बिना गर्भ धारण यहि काला ॥

गणनायक गुण ज्ञान निधाना ।  
पूजित प्रथम रूप भगवाना ॥

अस कही अन्तर्धान रूप हवै ।  
पालना पर बालक स्वरूप हवै ॥

बनि शिशु रुदन जबहिं तुम ठाना ।  
लखि मुख सुख नहिं गौरी समाना ॥

सकल मगन, सुखमंगल गावहिं ।  
नाभ ते सुरन, सुमन वर्षावहिं ॥

शम्भु, उमा, बहुदान लुटावहिं ।  
सुर मुनिजन, सुत देखन आवहिं ॥

लखि अति आनन्द मंगल साजा ।  
देखन भी आये शनि राजा ॥

निज अवगुण गुनि शनि मन माहीं ।  
बालक, देखन चाहत नाही ॥

गिरिजा कछु मन भेद बढायो ।  
उत्सव मोर, न शनि तुही भायो ॥

कहत लगे शनि, मन सकुचाई ।  
का करिहौ, शिशु मोहि दिखाई ॥

नहिं विश्वास, उमा उर भयऊ ।  
शनि सों बालक देखन कहयऊ ॥

पदतहिं शनि दृग कोण प्रकाशा ।  
बालक सिर उड़ि गयो अकाशा ॥

गिरिजा गिरी विकल हवै धरणी ।  
सो दुःख दशा गयो नहीं वरणी ॥

हाहाकार मच्यौ कैलाशा ।  
शनि कीन्हों लखि सुत को नाशा ॥

तुरत गरुड़ चढ़ि विष्णु सिधायो ।  
काटी चक्र सो गज सिर लाये ॥

बालक के धड़ ऊपर धारयो ।  
प्राण मन्त्र पढ़ि शंकर डारयो ॥

नाम गणेश शम्भु तब कीन्हे ।  
प्रथम पूज्य बुद्धि निधि, वर दीन्हे ॥

बुद्धि परीक्षा जब शिव कीन्हा ।  
पृथ्वी कर प्रदक्षिणा लीन्हा ॥

चले षडानन, भरमि भुलाई ।  
रचे बैठ तुम बुद्धि उपाई ॥

चरण मातु-पितु के धर लीन्हें ।  
तिनके सात प्रदक्षिण कीन्हें ॥

धनि गणेश कही शिव हिये हरषे ।  
नभ ते सुरन सुमन बहु बरसे ॥

तुम्हरी महिमा बुद्धि बड़ाई ।  
शेष सहसमुख सके न गाई ॥

मैं मतिहीन मलीन दुखारी ।  
करहूं कौन विधि विनय तुम्हारी ॥

भजत रामसुन्दर प्रभुदासा ।  
जग प्रयाग, ककरा, दुर्वासा ॥

अब प्रभु दया दीना पर कीजै ।  
अपनी शक्ति भक्ति कुछ दीजै ॥

॥ दोहा ॥

श्री गणेश यह चालीसा,  
पाठ करै कर ध्यान ।  
नित नव मंगल गृह बसै,  
लहे जगत सन्मान ॥

सम्बन्ध अपने सहस्र दश,  
ऋषि पंचमी दिनेश ।  
पूरण चालीसा भयो,  
मंगल मूर्ती गणेश ॥

---

[Ganesh Chalisa lyrics](#)

[शिव चालीसा हिंदी में PDF](#)

[श्री हनुमान चालीसा PDF](#)